[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ऋक्षध्वजाभिकहंनययुगल
कंकल्युग्मकनिश॥ हुमहं
नाठिटमैंहुम्यभषडलं
न्डुलीठः मिंभैं॥ ॐ मि
मंनमक्षा॥ ...ः मगा
ग्यः॥ नमैग्रये॥ मम्भ्यणे
ठि नमेंडन्तूय॥ नमेवमळय
मूं नैं नमेवमहे॥ नमैपानयडलो
३

सिद्धिरस्तु [illegible] ॥ ॐ नमः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॐ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॐ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

स्वल्पमेव सूत्र[illegible]ये हृत्त्रयात्
यत् तं परमतत्त्वं मत्तो ज्ञात्वा
प्नुहि ॥ ७१ ॥ तत्र मयि पर
मं भक्तिं वेदान्तमयमा
न्नत्वा [illegible] किञ्चित्
श्रियन्तमः ॥ ७३ ॥ तथा विध
[illegible] श्रियः [illegible]
[illegible] मं [illegible]

शि
गी
सं
५

𑆮𑆪𑆼: ॥𑇗 [illegible] 𑆪𑆱𑇀𑆛𑆴𑆠𑆼𑆤
𑆑𑆴𑆩𑆶𑆂 𑆱𑇀𑆛 𑆩𑆴𑆠𑆴𑆩𑆼𑆩𑆠𑆴: ।
𑆩𑆶𑆬𑆮𑆳𑆤𑆤𑆃𑆪𑆩𑆶𑆑 [illegible] 𑆪𑆳
𑆥𑆴𑆪𑆼𑆤: ॥𑇑𑇐॥ 𑆩𑆳𑆥𑆴𑆩𑆠𑆽:
𑆱𑆶𑆁𑆭𑆽𑆑𑆢𑆶𑆪𑆢𑆱𑇀𑆛𑆑𑆩
𑇗𑆩𑆳॥ 𑆑𑆴𑆩𑆼𑆠𑆶𑆁𑆥𑆠
𑆢𑆾𑆑𑆓𑆬𑆠𑆩 ॥𑇑𑇐॥ 𑆑
𑆑𑆴𑆩𑆶𑆩𑆼𑆥: 𑆥𑆬𑆩𑆱𑆶

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ॐ कुहृमं[illegible]मा ॥ येंगये
गीश्वरट्टाष्ठक्ष्मक्रुधयउः।
श्रुयभा ॥ ७ ॥ रण्डेंम्हट
मं म्हहृमंवाम्मिमभक्तु
उभा ॥ केमवाल्लनयैः भहृ
हृहृणिभमपृतः भृतः ॥ ११ ॥
उस्त्रमं म्हहृपरमंऊपमट
क्तुउंम्हतः ॥ विम्भयेमेभम्ह

जन् हृष्यामि च पुनः पुनः
१३॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र
पार्थो धनुर्धरः॥ तत्र श्रीर्वि
जयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व
णि श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु॥
भ गी पृ १० ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे मो
क्षयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः॥

بہ ها ... ۲۶۲ ر ر ا ا ا سا ش جا ها

ه طا عا ن فا قا

ث ب ث ج چ خا د ر ا س ش ل

ا ط ع ع ف ق ک گ ل م

ه لا ی ے ب ع ہ د ہ ح